परमात्मा कौन से हृदय में ...विराजेगा?

एक प्रजाप्रेमी सम्राट बारंबार अपने महल में एक सूफी संत को बुलवाकर उनके साथ सतसंग करता था। फकीर समझदार और निरहंकारी था। जब भी राजा बुलाये, वह महल में हाज़िर हो जाता था और राजा के हृदय में धर्म प्राप्ति की सच्ची समझ के बीज बो कर जाता।

ऐसा बहुत समय तक चला। एक बार सत्संग पूरा हुआ, उसके बाद फकीर ने कहा कि यह ज़रा धर्म के सिद्धांत विरुद्ध होती बात है। आप बुलाते हैं और मैं आ जाता हूँ। इनकार करना योग्य नहीं है, लेकिन यदि मैंने शुरुआत में इन्कार किया होता तो आज जो आपमें समझ का उदय हुआ है, वो नहीं होता। अब मैं जो बात कहता हूँ, वो आप समझ सकते हो। उस वक्त जो मैंने ऐसा कुछ भी कहा होता तो आपको अपमान जैसा लग सकता था, लेकिन धर्म की सच्ची समझ द्वारा आपमें जो नम्रता और संतों के प्रति आदर-भाव पैदा हुआ है, उससे आप मेरी बात का अर्थ समझ सकते होंगे। कुंआ कभी भी स्वयं चलकर प्यासे के पास नहीं आता, लेकिन यहाँ तो ऐसा हो रहा है कि कुंए को ही प्यासे के पास आने का आदेश दिया जाता है। क्या आपको अब यह बात योग्य लगती है?....और मेरी बात समझ में आई हो तो अब से मैं ही मेरी कुटिया पर आपकी प्रतिक्षा करुंगा।

- ब्र. कु. गंगाधर

सम्राट तो फकीर के प्रेम में डूबा हुआ था। संत के प्रति अनुराग के कई बीज उसके हृदय में पड़ चुके थे। इसलिए एक दिन अचानक वो फकीर के यहाँ पहुँचा। खेत में ही कुटिया बनाकर वे सूफी फकीर रहते थे। कुटिया छोटी, बिन-सुविधाजनक और मिट्टी की पुताई से बनी हुई थी। कुटिया पर फकीर की पत्नी थी और वह खाना बनाकर तैयार कर फकीर की राह देख रही थी। फकीर थोड़े दूर पर खेत में काम कर रहे थे।

पत्नी ने कहा, आप यह घास के बने आसन पर बैठिए, मैं अभी उन्हें बुलवाकर आती हूँ। सम्राट ने कहा, मैं यहाँ ही खड़ा हूँ। इधर-उधर घूमता-फिरता रहूँगा, आप जल्दी से बुलवाकर ले आइए। स्त्री को लगा कि, घास पर कुछ भी बिछाया नहीं है, इसलिए शायद राजा बैठते नहीं, इसलिए दौड़ते हुए अपनी कुटिया में गई और टूटी-फूटी एक चटाई उठाकर लाई। फकीर तो ऐसी चटाई पर भी सुख से सो जाता था, लेकिन राजा बैठ नहीं सका। उस चटाई पर लगी चित्तियों के कारण उसपर बैठने में शायद वो हिचकिचा रहा था। फकीर की पत्नी ने बहुत आदर और प्रेम के साथ चटाई बिछाई लेकिन राजा तो उसकी तरफ देखता ही रहा और कहा कि आप जाइए! मैं यहाँ आसपास ही चहलकदमी करता हूँ। फकीर की पत्नी को लगा कि इस तरह राजा को कुटिया के बाहर बैठना योग्य नहीं लगता होगा, इसलिए उसने कहा, आप यहाँ कुटिया के अंदर आइए। वहाँ खटिया बिछाया है। सम्राट अंदर गया लेकिन खटिया तथा कुटिया को देख एकदम से बाहर आ गया और बोला: 'आप जाइए, मेरी चिंता नहीं करें। जाकर फकीर को जल्दी से बुलाकर ले आइए।'

दौड़ते-दौड़ते वे फकीर के पास पहुँची। रास्ते में वह आश्चर्य के साथ स्वयं से बातें करती रही कि राजा कैसा है! उसे घास पर बैठने को कहा तो नहीं बैठा, मैंने कुछ भी नहीं बिछाया था, इसलिए नहीं बैठा होगा, यह सोचकर मैंने चटाई बिछाई, फिर भी वो नहीं बैठा। मुझे लगा कि इस तरह बाहर बैठाना ठीक नहीं है, तो मैंने कुटिया में खटिया बिछाकर बैठने को कहा...तो भी नहीं बैठा। उसने ऐसा क्यूँ किया?

जब उसने फकीर को ये सारी बातें बताईं तो उसने कहा, पगली! आप इतना भी समझ नहीं सकतीं? राजा तो राजमहल में रहता है। अपनी ये टूटी-फूटी चटाई या कुटिया उसके अनुरूप नहीं है। वो कैसे बैठ सकेगा? और दूसरी बात भी कह देता हूँ कि परमात्मा भी सम्राट का सम्राट है। हम उन्हें निमंत्रण देते हैं अपने हृदय में विराजमान होने के लिए, लेकिन परमात्मा के अनुरूप हृदय को मंदिर नहीं बनाते। वहां काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और ऐसे कई अवगुणों रूपी कचरे मौजूद हैं, अंतर में सखताई और कर्कशता का पारावार नहीं है। परमात्मा के अत्यंत सुकोमल कदम के लिए अपने अंतर को मखमल जैसा सुकोमल, रागद्वेष से रहित और अहंकार शून्य बनाना पड़े। परमात्मा एक विराट हस्ती है। बंधे हुए मन में या जाति-पाती, समप्रदाय या मेरे-तेरे की दीवारों से घिरे हुए छोटी-सी कुटिया में वह आ नहीं सकता। उसके लिए तो असीम शांत और विशाल हृदय चाहिए।

हमारी खुद की अंतरात्मा भी सम्राट के समान है। उसको पैसों के ढ़ेर पर बैठाएं, सुख-सुविधा के साथ भवन या महल में रखें, पद्-प्रतिष्ठा का सिंहासन दें, दुनिया भर की समृद्धि लेकर उसके सामने रख दें तो भी उसके उपर नहीं बैठेगा। वह उसे खुदा का विश्राम स्थान नहीं मानेगा। उसके आस पास घूमता-फिरता रहेगा लेकिन स्थिर होकर उसपर बैठ नहीं सकेगा। परमात्मा से दूर व्यक्ति का अशांत मन भी उसी तरह इधर से उधर ही भटकता रहेगा क्योंकि अंतर में कोई विराम नहीं है।

'जो हम इच्छा रखते हैं कि परमात्मा हमारे जीवन में और घर में आकर बसे तो हमें अपन हृदय और घर को परमात्मा के मंदिर जैसा बनाना चाहिए।'

योग से कमज़ोरियों को खत्म करने का समय

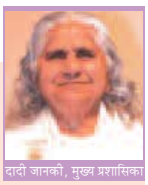

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

इतना मीठा बाबा है, संगमयुग है, इतना बड़ा परिवार है, इतने बड़े परिवार को देख हमारे बचपन के दिन याद आ रहे हैं। पता नहीं था इतनी वृद्धि होगी, इतनी वृद्धि को देखो, प्रभु लीला को देखो, कैसे कहाँ से चुन-चुन करके माला बनाई है। दुनिया में करोड़ों हैं, उसमें लाखों निकल आये। मुरली बहुत अच्छा दर्पण है।

बाबा अपने बगीचे को देख, हर एक फूल के रूप, रंग, खुशबू को देखता है। उसमें भी गुलाब का फूल सबसे अच्छा लगता है। गुलाब के फूल का जैसा है सुन्दर रंग, ऐसी है खुशबू। गुलाब के फूलों में भी सब एक जैसे नहीं होते हैं, थोड़ा-थोड़ा फर्क होता है, पर है गुलाब का फूल। तो बाबा कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बना रहा है। दुनिया में जहाँ-तहाँ कांटे ही लगते हैं। रूहानियत को देखो, खुशबू को देखो, रंग भी बहुत अच्छा है। रूहानियत में रह इस बगीचे में हर फूल को आत्मिक दृष्टि वृत्ति से देखो तो बहुत अच्छा लगता है। तो दृष्टि पहले या वृत्ति पहले? विचार करेंगे, वृत्ति से दृष्टि और दृष्टि से हमने किसका गुण देखा तो वृत्ति में चला गया, तो क्या हो गया? इसलिए दृष्टि सदा सुखकारी तभी होगी जब हमारी बुद्धि की लाइन क्लीयर हो, मनोवृत्ति साफ हो।

आत्मा क्या है? उसमें मन-बुद्धि-संस्कार हैं। है तो छोटी-सी, उसमें सारा रिकॉर्ड भरा हुआ है। अभी बाबा ने मन को शांत कर दिया, बुद्धि को शुद्ध श्रेष्ठ बना दिया और संस्कार पहले वाले सारे बदल गये। मन बुद्धि ने बदला। मैं मेरा को समझ के बदल गये। मैं बोलने में भी कितना फायदा हो गया! मनमनाभव कहते हैं फिर मध्याजी भव में लक्ष्मी-नारायण सामने हैं। जैसे ही बाबा ने आत्मा का ज्ञान दिया मेरे बच्चे हो तो अच्छा लगा। तो पहले अपने को आत्मा समझूं। आत्मा समझ के परमात्मा का बच्चा हूं, ऐसे इज़ी है या परमात्मा का बच्चा हूं, यह इजी है? आत्मा समझने में टाइम लगता है क्योंकि आत्मा को देह-अभिमान में रहने की आदत है इसलिए न्यारा-प्यारा नहीं है, कोई-न-कोई, कहाँ-न-कहाँ मेरेपन का भाव है और देही-अभिमानी स्थिति में बिल्कुल न्यारा-प्यारा है।

ऐसी योग के लगन की अग्नि हो जो सभी की सब कमज़ोरियां खत्म हो जायें इसलिए परम आत्मा की सन्तान हूँ। मैं आत्मा हूँ पर हूँ परमात्मा की। देह, सम्बन्ध, दुनिया सब पराये हैं, मेरे नहीं हैं। मेरा तो एक दूसरा न कोई। जब मेरा एक है तो मैं कौन हूँ? जैसे हमारे बाबा को मैं कृष्ण बनने वाला हूँ, यह घड़ी-घड़ी स्मृति में था, उस घड़ी नारायणी नशे में दिखाई पड़ता था माना वो नारायण के सतयुगी संस्कार अनुभव होते थे। हमको भी बाबा अपने समान बनाना चाहता है। जैसे वो बना है, सिखाता है मैं जैसे बन रहा हूँ तुम भी ऐसे बनो, यही राजयोग है। अगर मन कर्मेन्द्रियों के वश है तो गुलाम है, तो राजयोग नहीं है। योग लगाते हैं पर राजाई नशा नहीं है। अगर मन कर्मेन्द्रियां बिल्कुल ऑर्डर में हैं तो राजाई नशा चढ़ता है।

पहले हम समझते थे दान पुण्य करने से राजायें बने हैं, उनको भी नशा था पर वे भी सब खत्म हो गये हैं। पर हमें बाबा कहते इस राजयोग से तुमको राजाओं का राजा बना रहा हूं, पवित्रता से,योग से राजाओं का राजा। तो पहले अपवित्रता का नाम-निशान नहीं रहे। बनाने वाला बाबा, क्या बना रहा है वो दिखा रहा है। साक्षात्कार के साथ यह संकल्प हो कि मुझे ऐसा बनना है। तो बनने की भावना से बन जाते हैं। बनाने वाले में भी भावना है, इसी समय बन सकते हैं, ऐसा समय फिर नहीं आने वाला है, यही टाइम है जो बनाने वाला बना रहा है, क्या बनना है वो दिखा रहा है, कैसे बना रहा है वो भी बता रहा है। तो अपने आप को सम्भालो, समय चला जायेगा। बनाने वाला भी मुफ्त में कम्पनी दे रहा है, मुफ्तलाल कम्पनी में बिठा रहा है। जो कम्पनी के मालिक होते हैं उन्हें बहुत नशा होता है। ऐसे बाबा को प्यार करें या प्यार में लीन हो जायें। योग क्या है? बाबा के प्यार में समा जाना।

राधे कृष्ण मुरली की धुन में नाच रहे हैं, हँस रहे हैं पर लक्ष्मी-नारायण एकदम सभ्यता से खड़े हैं, तो इनको सामने रखने से हम उन जैसा बन सकते हैं। वो संस्कार अभी बन रहे हैं। तो लक्ष्मी-नारायण कैसे बनें? मन में कोई इच्छा नहीं, कोई ममता नहीं, मुझे कुछ चाहिए नहीं, बुद्धि फ्री है। बुद्धि योग कहा जाता है मन योग नहीं कहा जाता है क्योंकि मन से योग नहीं लगेगा, मन को शांत रखना है। भटकना, लटकना, किसी का आधार लेना छोड़ देवें तो मन शांत रहेगा। जिसका मन शांत नहीं है वो राजयोगी नहीं है। राजयोगी, यह सिर्फ टाइटल नहीं है, पर प्रैक्टिकली ऐसी लाइफ जीने वाला ही राजयोगी है। सच्चाई, प्रेम से अपनेपन की फीलिंग है तो कोई कहाँ से भी आता जाता है, पर बाबा के बच्चे हैं जिसे यह फीलिंग है उसकी दिल बड़ी खुश और मज़बूत है। भले कोई गुस्सा करे या फिर कोई अपनी स्थिति दिलखुश मिठाई समान बना करके रखे। जो दिल खुश रखने वाला है उसके सामने कोई भी आवे उसकी भी दिल को वो खुश करेगा अर्थात दिलखुश मिठाई बनाओ भी और खिलाओ भी, ऐसी अवस्था हो।

मधुबन है शक्ति भरने का स्थान

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

मधुबन में आना माना शक्ति भरना, जो ऐसा समझते हैं उन्हें आगे बढ़ने की हिम्मत आ जाती है। अभी यह शक्ति कायम रखना, छोड़ना नहीं, मधुबन की सौगात लेके जा रहे हो ना, इसको यूज़ करना। कुछ भी होवे तो कहो नहीं, मधुबन में मैंने यह संकल्प किया था, वह प्रैक्टिकल करना ही है। यहाँ से कई दृढ़ निश्चय करके जाते हैं तो कोई भी मुश्किल चीज़ उनके लिए बहुत सहज हो जाती है। आप भी दिल से छोड़ेंगे तो आपको भी उसकी मदद मिलेगी। बाबा से प्यार तो सबका है। तो प्यार वाला कुछ कहे यह छोड़ो, मुश्किल होता है क्या? प्यार में अपनी जान भी कुर्बान कर देते हैं, यहाँ तो खराबी कुर्बान करनी है और तो कुछ करना ही नहीं है। तो बाबा को दे करके खाली हो करके जायेंगे और बाबा की बातें भरके जायेंगे। ठीक है ना! बाबा कितना खुश होगा एक-एक को देख के, परिवर्तन किया है, छोड़ा है, हिम्मत रखी है, तो ऐसे हिम्मत वाले बच्चों को देख करके बाबा कितना खुश होगा! तो जब बाबा देखे तो खुश हो जाये कि हरेक बच्चे ने कुछ न कुछ अपनी कमज़ोरी छोड़ी है। ऐसे नहीं साथ ही ले जाओ, साथ नहीं लेके जाना, यहाँ छोड़ के जाना। छोड़ना आता है? या कहेंगे कि छूटता ही नहीं है? अरे, मैं ब्राह्मण हूँ, परमात्मा का बच्चा हूँ, परमात्मा का बच्चा क्या नहीं कर सकता! जो करने चाहे वो कर सकता है। बाबा मेरे साथ है, दिल में बाबा को रखो, दिल से निकालो नहीं। कुछ भी हो बाबा, बस, बाबा को दे दिया खत्म। अगर सच्ची दिल से देंगे तो बाबा ज़रूर लेगा, हमारा यह अनुभव है। तो सभी बाबा के बच्चे क्या बनके जायेंगे? रूहे गुलाब। यह स्टैम्प लगा! मेरा बाबा मेरे दिल में बैठा है तो कुछ भी मुश्किल नहीं होगा। बाबा को कहना, बाबा मेरे से थोड़ा नहीं होता है, आप थोड़ा मदद करो तो बाबा मदद के लिए बंधा हुआ है। बाबा है ही किसके लिए? हम बच्चों के लिए तो है। तो हम बच्चे हैं, तो बाबा क्यों नहीं मदद करेगा! सच्ची दिल से कहना। ऐसे नहीं बाबा मदद करो ना, करो ना, तो क्यों करे? लायक होंगे तो करेगा ना! तो संकल्प दृढ़ करो बस करना ही है, बुराई को छोड़ना ही है। छोड़ा तो छोड़ा फिर ले नहीं जाना। तो बाबा को क्या रिज़ल्ट सुनाऊं... कि यह तो सभी रूहे गुलाब हैं। तो बाबा कहेगा वाह बच्चे वाह! बाबा की तरफ देख रहे हो ना-बाबा कितना खुश हो रहा है। तो सदा खुश रहना और खुशी बाँटना। बिचारे दु:खी कितने हैं! समाचार सुनो, कोई देश में क्या हो रहा है, कोई देश में क्या... हम देखो कितने लकी हैं, बाबा के घर में आ गये हैं। तो खुशी नहीं गँवाना।

कहावत है खुशी जैसी खुराक नहीं। तो रोज़ खुश रहना, खुशी की खुराक खाना तो सब खत्म हो जायेगा। अच्छा। देख रही हूँ, सभी के अंदर यही है-बाबा मिलेगा, बाबा मिलेगा, बाबा मिलेगा...। और बाबा को भी बहुत प्यार है एक-एक बच्चे से। बाबा भी कहता है मेरे बच्चे, मेरे बच्चे। बाबा बच्चों को देख करके इतना खुश होता है, जो मैं तो ऐसा कर नहीं सकती हूँ, लेकिन बाबा का चेहरा एक-एक बच्चे को याद करते वाह मेरा बच्चा वाह! वाह मेरा बच्चा वाह! ऐसे बाबा याद करता है और हम खुश होते हैं वाह मेरा बाबा! वाह मेरा बाबा! तो कुछ भी हो जाये बस, वाह मेरा बाबा! वाह बाबा! वाह बाबा! करना, तो वो बात खत्म हो जायेगी क्योंकि यहाँ से बदलके तो जाना है ना! जो कुछ भी हो वो यहाँ छोड़ के जाना। दिया हुआ वापिस नहीं लिया जाता। दिये हुए पर हमारा अधिार नहीं रहता। छोड़ने में तो होशियार हो, लेने में भी होशियार हो तो मालामाल होके जायेंगे।